बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार

एक अनुशीलन

प्रधान संपादक

डॉ. अविनाश जायसवाल

अनुक्रमणिका

शब्द और शब्द - डॉ. अविनाश जायसवाल

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार : एक अनुशीलन

1. बौद्ध धर्म के अनुयायी डॉ. आंबेडकर – डॉ. पी. पार्वती 1-3
2. बौद्ध धर्म, दर्शन, संप्रदाय तथा साहित्य – डॉ. दासरी मौलाली 4-5
3. बौद्ध साहित्य में बौद्ध दर्शन – डॉ. मोदुमपल्ली संपत 6-7
4. बौद्ध धर्म की भारतीय संस्कृति को देन – डॉ. मीना सिंह 8-10
5. दलित साहित्य एवं बौद्ध दर्शन - डॉ. ई. सुनिता 11-12
6. हिंदी काव्य में बौद्ध दर्शन (अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' के संदर्भ में) - डॉ. वी. गोविंद 13-15
7. बौद्ध धर्म : इतिहास एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत - डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी 16-18
8. हिंदी के बौद्ध धर्म में स्त्रियों का स्थान - डॉ. अफ़सर उन्निसा बेगम 19-21
9. बौद्ध धर्म उद्भव और विकास - डॉ. के. नीरजा 22-24
10. अश्वघोष के काव्य में : सिद्धार्थ के मन में वैराग्य उत्पन्न - जी. प्रकाश 25-28
11. बौद्ध धर्म : उद्भव और विकास - डॉ. के. सोनिया 29-31
12. विश्वस्तर पर बौद्ध धर्म का प्रभाव - डॉ. संतोषी 32-34
13. हिंदी के बौद्ध साहित्य का सामाजिक पक्ष - सरदार ज्योति 35-37
14. हिंदी का बौद्ध साहित्य : आविर्भाव एवं स्वरूप - डॉ. अरुण हेरेमत 38-39
15. हिंदी साहित्य : बौद्ध दर्शन का प्रभाव - डॉ. के. माधवी 40-42
16. भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और उनका बौद्ध दर्शन - डॉ. एम. गोपी 43-45
17. भिक्षु संघ का निर्माण व धर्म प्रचार - आदि नारायण बादावत 46-47
18. बौद्ध धर्म के विभिन्न संप्रदाय - डॉ. के. श्याम सुंदर 48-50
19. सिद्ध कवि एवं सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ - डॉ. टी. सुनीता 51-52
20. महायान, हीनयान तथा वज्रयान संप्रदायों में निहित सिद्धांत - डॉ. टी. सुमती 53-55
21. बुद्ध धर्म का उदय और अभ्युदय - सी.एच.वी. महालक्ष्मी 56-57
22. राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. के. अन्ना 58-60

13. हिंदी के बौद्ध साहित्य का सामाजिक पक्ष

सरदार ज्योति

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को सुखमय बनाना था, मानव ही उनके शिक्षाओं का केंद्र बिंदु था। मनुष्य का कल्याण, समाज में समानता, भाईचारा, प्रेम और सौहार्द, शांति ही बुद्ध धम्म का उपदेश रहा है। बुद्ध ने देखा कि लोग किसी न किसी कारण दु:खी थे जिससे समाज और देश भी दु:खी हो रहा था। जब तक व्यक्ति प्रसन्न नहीं होगा, समाज देश या विश्व का विकास नहीं हो सकता क्योंकि समाज की इकाई तो मनुष्य ही है। इसीलिए कहा जाता है कि 'धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं है।' गौतम बुद्ध के पहले वैदिक व्यवस्था में स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नहीं था उनको यज्ञोपवीत का भी अधिकार नहीं था। स्त्रियों को केवल भोग-विलास की वस्तु समझा जाता था और उनके लिए धार्मिक कार्य निषिद्ध थे। ऐसे में गौतम बुद्ध ने उनकों बराबरी का दर्जा देकर समाज में स्त्रियों को अपना महत्व अनुभव कराया। जिससे स्त्रियों में सामाजिक दृष्टिकोण के प्रति परिवर्तन आया। बुद्ध ने स्त्री शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता पर भी बल दिया। महिलाओं को भिक्षुणी बनने का अधिकार देकर सामाजिक और धार्मिक क्रांति लाई। भिक्षुणी संघ में दीक्षित होने का मौका मिलते ही अनगिनत स्त्रियाँ भिक्षुणियाँ बनी। उन्होंने कला-संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगित हासिल की। 'थेरीगाथा' भिखुणियों ने ही लिखी। यह नारी स्वतंत्रता को प्रकट करने वाला प्रथम ग्रंथ है।

इस प्रकार बुद्ध ने दुनिया के इतिहास में पहली बार एक प्रथक और स्वतंत्र भिक्षुणी संघ की स्थापना की। स्त्रियों को समानता दिलाने वाले भगवान बुद्ध विश्व के पहले गुरु बने। गौतम बुद्ध ने जिस सामाजिक सरंचना की परिकल्पना की थी, भिक्षु संघ उसका एक आदर्श नमूना था। यह भिखु संघ पूरी तरह प्रजातांत्रिक था। बुद्ध ने संघ के लिए जो नियम बनाये खुद भी उसका पालन किया। उनके नियमों का पालन पंचशील और अष्टशील भिक्षु-भिक्षुणी और गृहस्थ, उपासक-उपासिकाएँ ने भी किया। ब्रिटेन में प्रजातंत्र आने से पूर्व ही बुद्ध ने भिक्षु और भिक्षुणी संघ में प्रजातंत्र की प्रणाली लागू कर दी थी। संघ की भाषा इस बात का उदाहरण है। गौतम बुद्ध चौदह भाषाओं के दक्ष होने पर भी उन्होंने सारे उपदेश उस समय की लोक भाषा पालि में ही दिए। जिससे आम जनता धम्म को समझे और उसका पालन कर सके। गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के केंद्र में जातिगत भेदभाव को मिटाकर सामाजिक समानता स्थापित करना था। बुद्ध के अनुसार जन्म से न कोई ब्राम्हण होता है और न कोई शूद्र। मनुष्य का मूल्य उसकी जाति से नहीं उसके कर्मों से आंका जाता था।

उनका कहना था कि कर्म से ही इंसान ब्राह्मण और शूद्र बनता है। बुद्ध के समानता

सिद्धांत के कारण लोगों में स्वाभिमान और आत्मसम्मान बढ़ता गया और भौतिक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती गयी जो कि हर मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इस प्रकार बुद्ध ने जातिगत भेदभाव का पूरी तरह खंडन किया।

बौद्ध धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक पर आधारित धर्म है। जिसमें रूढ़िवाद एवं अंधविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है। वे कहते है कि उनकी शिक्षाएँ न तो दर्शनशास्त्र है ना ही सिद्धांत ना ही कल्पना है उनकी शिक्षा में प्रत्यक्ष अनुभव का प्रमाण है। जहाँ प्रमाणिकता के बिना कुछ भी स्वीकार्य नहीं। परंतु समाज में कई ऐसे धर्म है जो मनुष्य को रूढ़ियों और अंधविश्वासों में जकड़कर रखा था। इन अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का खंडन करते हुए बुद्ध ने कहा कि धर्म की धुरी "ईश्वर और मनुष्य का संबंध नहीं, बल्कि मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध है।" बुद्ध ने ईश्वर को कभी सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया, वे कहते थे कि ईश्वर मात्र एक कल्पना है, तथागत का मानना था कि प्रार्थना ने पुरोहित को जन्म दिया और पुरोहित ने अंधविश्वास और रूढ़ियों को जन्म दिया जिसके कारण समाज अंधविश्वासों में डूबा हुआ था। यही कारण था कि वे रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों के सख्त विरोधी थे। संपूर्ण विश्व में हिंसा, डर और आतंक का वातावरण छाया हुआ था। विज्ञान का भीषण नरसंहारक हथियार बनाने में दुरूपयोग किया था। पूरी मानव जाति विनाश के कगार पर खड़ी हुई थी। ऐसे में बुद्ध की शिक्षाएँ पहले से भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई थी। वे कहते थे कि-

"बैर से बैर कभी शांत नहीं होता, अबैर से ही बैर शांत होता है, यही संसार का नियम है।" अर्थात एक आदमी युद्ध में लाखों आदमियों से जीत कर शांत नहीं होता, बल्कि अपने आपको जीतकर शांत होता है। अर्थात दूसरों को जीतने की अपेक्षा में अपने आप को जीतना श्रेष्ठ है। भगवान बुद्ध का यह उपदेश विश्व में शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक है। बुद्ध का कहना है कि शील, सदाचार से अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण अनिवार्य रूप से होता है। यदि मनुष्य का कल्याण हो रहा है तो समाज का भी कल्याण होगा। सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ गरीबी, भूखमरी रोगों से लड़ने में एक-दूसरे की सहायता करेंगे। व्यक्ति का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता, वह बहुत से वस्तुओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। व्यक्ति और समाज की पारस्परिक निर्भरता अपनी और दूसरों की पारस्परिक निर्भरता को एक दूसरे की सहायता से समझा जा सकता है। इस प्रकार बुद्ध ने मानव जीवन और आस-पास के वातावरण से संबंधित हर पहलू का विवेचन किया और उपदेश दिया। बुद्ध के विचार की प्रासंगिकता आज पहले से अधिक है।